चौपाई प्रगटी

न कांई मनमां न कांई चित, न कांई मारे रदे एवडी मत।
एक वचन समू नव केहेवाय, एतां आव्यो जाणे पूरतणो दरियाय।। १ ।।

इस तारतम वाणी को कहने के लिए मेरे मन में, मेरे चित्त में तथा मेरे हृदय में इतनी बुद्धि नहीं है कि मैं इसके एक शब्द का भी वर्णन कर सकूं, पर धाम धनी की मेहर से दरिया के प्रवाह के समान वाणी आ रही है।

श्री सुंदरबाई लई आविया, इंद्रावती ऊपर पूरण दया।
रुदे बेसी केहेवराव्युं एह, साथ माटे कीधा सनेह।। २ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) इस वाणी को लेकर आई हैं और श्री इन्द्रावतीजी पर पूर्ण रूप से मेहरबान हैं। जिसके हृदय में बैठकर बड़े प्रेम से सुन्दरसाथजी के लिए वाणी कहलवा रही हैं।

वचन एक केहेतां निरधार, अमे घेर जईने लेसूं सार।
अदृष्ट थईने कहे वचन, साथ सकल तमे ग्रहजो मन।। ३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी के तन से) कहती हैं कि मैं अपने घर श्री इन्द्रावतीजी के दिल में बैठकर सुन्दरसाथ की अच्छी तरह से खबर रखूंगी। हे सुन्दरसाथजी! देवचन्द्रजी ने शरीर छोड़ते समय यह जो वचन कहे उनको तुम मन में दृढ़ता के साथ ग्रहण कर लो।

आपण पेहेलां पगला भरियां जेह, वली जे कीधां प्रेम सनेह।
ते प्रगट कीधां आपण माट, धोक मारग ए आपणी वाट।। ४ ।।

हम पहली बार (ब्रज, रास में) प्यार और स्नेह से जैसे रहते थे, वही रास्ता हमको बतलाया है। रास्ता सरल और सुगम है। फल की प्राप्ति के लिए पक्षी की तरह है। (चींटी की तरह नहीं जो हवा के झोंके से बार-बार गिरती और चढ़ती है)।

आपणने ए प्रगट करी, साथ सकल लेजो चित धरी।
तमे रखे हलवी करो ए वाण, पूरण दयाए कह्यूं निरवाण।। ५ ।।

हे साथजी! राजजी महाराज ने हमको वाणी से साक्षात् दिखलाया। इसको तुम चित्त में धारण कर लो। इन वचनों को तुम हल्का न समझो। श्री राजजी महाराज ने पूरी कृपा करके यह वाणी हमें दी है।

प्रबोध वचन ते सदा केहेवाय, पण आ वचन कांई प्रगट न थाय।
ते माटे तमे सुणजो साथ, आपणमां बेठा प्राणनाथ।। ६ ।।

उपदेश तो कईयों ने दिये, पर जिस वाणी से अपनी और अपने घर की पहचान होती है, उसे किसी ने आज तक नहीं कहा। इसलिए हे साथजी! तुम सुनो। श्री राजजी महाराज अब अपने बीच में बैठकर वाणी से पहचान करा रहे हैं।

आपणने सिखामण कहे, पण भरम आडे कांई रुदे नव रहे।
ते भरम उडाडो तमे जोई रास, जेम ओलखिए आपणो प्राणनाथ।। ७ ।।

हमको बार-बार समझाते हैं, किन्तु संशय (माया) के कारण हृदय में उनकी वाणी नहीं आती। उस संशय को उड़ाने के लिए तुम रास में पिया के साथ कैसे रहे? याद करो, जिससे अपने धनी की पहचान हो जाए।

Nijanand App

विहिला थयानी नहीं ए वार, तेडवा आपणने आव्या आधार।
प्रगट पुकारी कहे छे सही, आ वचन कहाव्या अंतरगत रही।। ८ ।।

हमको श्री राजजी महाराज बुलाने के लिए आए हैं, इसलिए अब उनसे दूर होने का समय नहीं है। यह वचन श्री राजजी महाराज मेरे अन्दर बैठकर कहलवा रहे हैं।

एक वचन न आवे अस्तुत, सोभा दीधी जेम कालबुत।
अस्तुतनी आंहीं केही वात, प्रगट थावा कीधी विख्यात।। ९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझमें श्री राजजी महाराज की महिमा कहने की जरा भी शक्ति नहीं है। कहने वाले स्वयं धाम के धनी हैं। जैसे पत्थर की मूर्ति को भगवान की शोभा मिलती है, उसी प्रकार से मेरे तन को शोभा मिली है। कहने वाले श्री राजजी महाराज ही हैं, जिन्होंने संसार में साथ के लिए वाणी से जाहिर होना है।

फल वस्त जे भारे वचन, जीव पण न कहे आगल मन।
ते प्रगट कीधां अपार, जे कांई हुतो आपणो सार।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की पहचान कराने वाले भारी वचनों के लेने के लिए जीव भी मन को आगे नहीं करता। उन्होंने मेरे द्वारा सार वस्तु अपने घर श्री परमधाम की सब बातें जाहिर करा दीं।

सगाई कीधी प्रगट, आपण घणुंए राखी गुपत।
वचन एक ए छे निरधार, श्री सुंदरबाई केहेतां जे सार।। ११ ।।

श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी महाराज) कहते थे कि हमारा नाता परमधाम का है, जिसे अब तक हमने जाहिर नहीं किया था।

आ लीला थासे विस्तार, सूरज ढांक्यो न रहे लगार।
आ लीला केम छानी रहे, जेहेने रास धणी एम वचन कहे।। १२ ।।

इस लीला का आगे चलकर बहुत विस्तार होगा। ज्ञान के सूर्य को ढांपा नहीं जा सकेगा। यह लीला कैसे छिप सकती है, जिसके लिए धाम के धनी स्वयं इतना महत्व देते हैं।

ते माटे तमे सुणजो साथ, जे प्रगट लीला कीधी प्राणनाथ।
कोई मनमां म धरजो रोष, रखे काढो मेहेराजनो दोष।। १३ ।।

इसलिए प्यारे साथजी! सुनो, श्री राजजी महाराजजी ने जाहिर होने के लिए ही यह लीला की है। यह बात सुनकर कोई दुःखी नहीं होना और श्री मेहराज को दोष नहीं देना।

एटलूं तमे जाणो निरधार, आ वचन मेहेराजें प्रगट न थाय।
आपण घरनी नहीं ए वात, जे किव करी मांडिए विख्यात।। १४ ।।

यह बात निश्चित रूप से जानो। यह वाणी श्री मेहराज से जाहिर नहीं हो सकती, क्योंकि परमधाम की यह रीति नहीं कि अपने घर की बात कविता की तरह रचना करके कही जाए।

हूं मन मांहें एम जाणुं घणुं, जे किव नहीं ए काम आपणुं।
पण आतां नथी कांई किवनी वात, रुदे बेसी केहेवराव्युं प्राणनाथ।। १५ ।।

यह बात मैं अच्छी प्रकार से मन में जानती हूं कि अपना काम कविता करना नहीं है। यहां तो कविता का कोई काम ही नहीं है। यह तो सब श्री राजजी महाराज की ही वाणी है, जो हृदय में बैठकर स्वयं कहला रहे हैं।

Nijanand App

ए वचन सर्वे आवेसमां कह्या, उत्तमबाईए जोपे करी ग्रह्या।
एम कह्युं दई आवेस, जे प्रगट लीला कीधी वसेस।। १६ ।।

यह सब वाणी आवेश द्वारा कहलवाई है, जिसे उत्तमबाई (ऊधो ठाकुर) ने अच्छी तरह (हवसा में साथ थे) ग्रहण किया। इस प्रकार अपने आवेश द्वारा कहलाया कि अब यह लीला सब में जाहिर हो जाएगी।

में मन मांहें जाण्यूं एम, जे किव थासे त्यारे रमसूं केम।
किव पण थई आ वचन विचार, रमी इंद्रावती अनेक प्रकार।। १७ ।।

मैंने मन में ऐसा जाना कि यदि यह मेरी बनाई कविता होगी तो सत का वर्णन कैसे होगा, किन्तु यदि देखा जाए तो एक तरह से कविता का रूप भी बन गया तथा सत को भी प्रगट किया। यह कहने की खूबी केवल इन्द्रावती में ही है।

सघला कारज थया एम सिध, श्रीसुंदरबाईए सिखामण दिध।
रुदे बेसी केहेवराव्युं रास, पेहेलो फेरो कीधो प्रकास।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने हृदय में बैठकर रास का वर्णन कराया और उसका सिखापन देकर, हमारे सभी काम इसी तरह पूर्ण कर दिए। (रास की लीलाओं से हमने वालाजी को अपने से अलग न करने की लीला की और अभिमान करने पर दुःख मिला। अतः अभिमान कभी न करना, यह सीखो)

ते माटे तमे सुणजो साथ, आपण काजे कीधूं प्राणनाथ।
रखे जाणो मनमां रहे कांई लेस, ते माटे कीधो उपदेस।। १९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, अपने अन्दर माया लेशमात्र भी न रह जाए, इसलिए राजजी महाराज ने ऐसी सुन्दर वाणी से उपदेश (ज्ञान) दिया।

आपण पेहेला पगला भरियां सार, एम चालो म लावो वार।
वली जो जो आ पेहेलां वचन, प्रेम सेवा एम राखो मन।। २० ।।

हमने पहली बार ब्रज से रास में जाते समय माया को छोड़कर दिखाया था। उसी तरह देर मत करो। इस बार भी फिर उसी तरह से पहले फेरे के वचनों को दखो, फिर प्रेम और सेवा में अपने मन को लगा दो।

तारतम वचन कहूं वली फरी, तमने कह्युं छे अनेक विधे करी।
वली तमने कहूं प्रकास, सुणजो एक मने ग्रही स्वांस।। २१ ।।

हे साथजी! मैं आपको बार-बार तारतम की वाणी से समझाती हूं। आप भी एक मन, एक चित्त से वाणी के ज्ञान को सुनो।

पेहेले फेरे श्री वैकुण्ठनाथ, इछा दरसन करवा साथ।
साथतणे मन मनोरथ एह, जे माया रामत जोइए तेह।। २२ ।।

पहली बार (ब्रज, रास में) अक्षर भगवान को हमारे दर्शन करने की इच्छा थी और सुन्दरसाथ को माया (संसार) देखने की इच्छा थी।

त्यारे भगवानजी मन विमास्या रही, श्री धणीजीए इछा कीधी सही।
लाधूं सपन दीधूं आवेस, माया रामत कीधी प्रवेस।। २३ ।।

तब अक्षर ब्रह्म ने मन में विचार किया और श्री राजजी महाराज ने उनकी इच्छा ब्रजरास में पूरी की। हम सबने स्वप्न में श्री राजजी के आवेश के साथ माया के खेल (ब्रज) में प्रवेश किया।

Nijanand App

ए आवेस लईने करी, प्रगटया गोकुल नन्द घरी।
साथ सपन एम लाधूं सही, जे गोकुल रमिया भेला थई।। २४ ।।

इस आवेश को लेकर अक्षर ब्रह्म नन्द के घर में (विष्णु के तन में जिसका नाम कृष्ण रखा गया) प्रगट हुए। इसी प्रकार उसी ब्रह्माण्ड (कालमाया के पहले ब्रह्माण्ड) में हम सखियां भी आईं और गोकुल में मिलकर खेलीं।

अग्यारे वरस लगे लीला करी, कालमाया इहांज परहरी।
जोगमाया करी रमियां रास, आनन्द मन आणी उलास।। २५ ।।

गोकुल में ग्यारह वर्ष तक लीला करके कालमाया के ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया तथा योगमाया के ब्रह्माण्ड में (नए तन योगमाया के धारण कर) उमंग के साथ रास की लीला की।

रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकल मन अधिक सनेह।
कांईक उत्कंठा रही मन सार, तो आपण आव्या आणी वार।। २६ ।।

रास खेलने के बाद हम (हमारी आत्माएं, ब्रह्मसृष्टि—तन नहीं) घर (परमधाम) में सावधान हुए, तब सुन्दरसाथ के मन प्रेम से भरपूर थे। फिर भी माया देखने की चाहना मन में शेष रह गई, इसलिए हम इस बार फिर कालमाया के ब्रह्माण्ड में आए।

वली एक वचन कहूं सुणजो साथ, दया करी कहे प्राणनाथ।
आ किव करी रखे जाणो मन, भरम टालवा कह्यां वचन।। २७ ।।

कृपा करके श्री प्राणनाथ राजजी महाराज स्वयं कहते हैं, सुन्दरसाथजी! हमारी इस वाणी को सुनो। यह कविता नहीं है। तुम्हारे सब संशय मिटाने के वास्ते ही यह वाणी कही है।

भरम टले ओलखाय धणी, अने सेवा थाय मारा वालाजी तणी।
ओलखाय वल्लभ तो टले माया पास, एटला माटे प्रगट थयो रास।। २८ ।।

तुम्हारे संशय मिट जाने पर ही तुम्हें धनी की पहचान होगी। फिर श्री राजजी महाराज की सेवा होगी। वालाजी की पहचान हो जाए तो माया का रंग उतर जाएगा। इस कारण से रास का वर्णन किया। (यदि सुन्दरसाथ को राजजी महाराज के स्वरूप व निसबत की पहचान कराके तारतम दिया जाता तो माया का रंग हट जाता। इस कारण से ही तुम्हें रास की वाणी कहनी पड़ी।)

पेहेला फेगना अवतार, ते तारतमे कह्या विचार।
पेहेले फेरेतां खबर न पडी, तो आपण आव्या आंहीं वली।। २९ ।।

पहले फेरे में जो अवतार हमारे साथ आया (आतम अक्षर और धनी जी का जोश) उसकी पहचान हमें नहीं हुई थी। इस कारण से हम इस संसार में आए। यह पहचान अब तारतम ज्ञान (जागृत बुद्धि) से हो रही है।

कांईक मन मांहें रह्यो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस।
हवे आ फेरानो जो जो विचार, अजवालूं लई आव्या आधार।। ३० ।।

हमारे मन में नासमझी थी (तारतम ज्ञान नहीं था), जिसे धनी अब थोड़ा-सा भी नहीं रहने देना चाहते हैं, इसलिए इस फेरे में जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान) को लेकर पधारे हैं, इसलिए अब दुबारा विचार करें।

Nijanand App

साथने रखे उत्कंठा रहे, तारतम वचन पाधरा कहे।
लई तारतम आव्या आ वार, मेहेता मतू घेर अवतार।। ३१ ।।

सुन्दरसाथ को कोई उत्कण्ठा न रहे, इसलिए मत्तू मेहता के घर में तारतम ज्ञान (जागृत बुद्धि) लेकर आए। केवल तारतम ज्ञान ही घर का सीधा रास्ता दिखाता है।

कुंअरबाई मातानूं नाम, उत्तम कायथ उमरकोट गाम।
श्री देवचंदजी नगर आविया, आवी वचन भागवतना ग्रह्या।। ३२ ।।

श्री देवचन्द्रजी की माताश्री का नाम कुंवरबाई है। उमरकोट ग्राम में उत्तम कायस्थ परिवार में थे। श्री देवचन्द्रजी उमरकोट ग्राम छोड़कर (नौतनपुरी) नवांनगर आए और आकर भागवत के वचनों को ग्रहण किया।

चौद वरस लगे नेष्टा बंध, वचन ग्रह्यां सघली सनन्ध।
एणे समे गांगजी भाई मल्या, धनबाई ऊपर पूरण दया।। ३३ ।।

चौदह वर्ष तक व्रत लेकर विधिवत भागवत के सब सार ग्रहण किए। इसी समय गांगजी भाई मिले जो धनबाई की आतम है। उन पर पूर्ण कृपा की।

सनन्धे सर्वे कह्या वचन, ग्रह्या गांगजी भाइए जोपे मन।
एटला लगे कोंणे नव लह्यां, ते गांगजी भाई घेर प्रगट थया।। ३४ ।।

गांगजी भाई को पूर्ण हकीकत के साथ परे की वाणी सुनाई, जिसे गांगजी भाई ने पूर्ण विश्वास से सुना। आज तक जो ज्ञान किसी को नहीं मिला था, वह गांगजी भाई को प्राप्त हुआ।

पधराव्या पोताने घेर, जुगते सेवा कीधी अनेक पेर।
त्यारे श्रीमुख वचन कह्यां प्राणनाथ, जेखोली काढवो छे आपणो साथ।। ३५ ।।

गांगजी भाई (श्री देवचन्द्रजी के अन्दर बैठे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान की) उन्हें अपने घर ले गए और बड़े प्यार और भाव से सेवा की। तब श्री प्राणनाथजी ने (श्री देवचन्द्रजी के तन में) अपने मुखारविन्द से कहा कि सुन्दरसाथ को खेल में से खोजकर लाना है।

प्रवेस कीधो छे माया मंझार, तेडी आपणने जावूं निरधार।
अमे आव्या छूं एटले काम, तेडवा साथ घरे श्री धाम।। ३६ ।।

सुन्दरसाथ माया के बीच आए हैं। उनको लेकर घर जाना है। मैं केवल सुन्दरसाथ को अपने घर ले जाने के काम से ही आया हूं।

त्यारे गांगजी भाई पाम्यां अचरज मन, जे किहां छे साथ अने आवसे केम।
आ वचन वेहदना कोण मानसे, केणी पेरे ए साथ आवसे।। ३७ ।।

यह सुनकर गांगजी भाई को बहुत हैरानी हुई कि सुन्दरसाथ कहां हैं और वह कैसे आएंगे? इन बेहद के वचनों को कौन मानेगा और सुन्दरसाथ कैसे आएंगे?

आ माया पूर वहे नताल, नख मूक्यो लई जाय तत्काल।
लेहेर ऊपर आवे छे लेहेर, मांहें दीसे भमरीना फेर।। ३८ ।।

माया का बहाव इतना जोरदार है कि यदि अंग का नाखून भी उसको छू जाए तो माया नाखून को तोड़कर ले जाएगी। (माया की थोड़ी-सी भी चाह हमें माया में घसीट कर ले जाएगी) इसके बहाव में लहर पर लहर आती हैं और भंवर पड़ती हैं।

Nijanand App

आडा ऊभा वेहेवट घणां, अने विकराल जीव माहें जलतणा।
ऊंचो आडो ऊभो ऊंडो अतांग, पोहोरो कठिण नथी केहेनो लाग।। ३९ ।।

माया का बहाव टेढ़ा-मेढ़ा है, जिसमें जल में रहने वाले बड़े-बड़े जीव हैं और जल भी अथाह गहरा है। यहां ऐसा कठिन समय है कि कोई रास्ता बाहर जाने का नहीं दिखता।

नव सूझे हाथने हाथ, माया अमले छाक्यो साथ।
नव ओलखे आपने पर, सुध नहीं सरीर न सूझे घर।। ४० ।।

माया के नशे में सुन्दरसाथ ऐसे लिप्त हो गए हैं कि अब उन्हें अपने और पराये की सुध नहीं और न अपने घर की याद आती है, क्योंकि यहां इतना अन्धकार है कि अपना हाथ भी नहीं सूझता।

त्यारे बेहेर दृष्टनो कह्यो विचार, एक मोटो आडीको थासे निरधार।
अंतरगते आवसे धणी, वस्तों आपणने देसे घणी।। ४१ ।।

तब सांसारिक दृष्टि से बड़ी आडीका (चमत्कारिक) लीला होगी। यह दिल में लिया। जिसमें श्री राजजी महाराज हमारे बीच में आएंगे तथा बहुत तरह की चीजें हमको देंगे।

आपण मांहें आंहीं आरोगसे, साथतणी दृष्टे आवसे।
थासे छेडा ग्रह्या लगण, मानसे मन त्यारे अति घण।। ४२ ।।

अपने बीच में यहीं आकर भोजन करेंगे और सुन्दरसाथ को दर्शन देंगे। इससे सुन्दरसाथ उनका दामन पकड़ लेंगे और उनके मन में पूर्ण विश्वास होगा।

आवसे साथ उछाह अति घणां, पण तमे वचन मूको रखे तारतम तणां।
बेहेर दृष्टतणो जोई अजवास, आनन्द मन उपजसे साथ।। ४३ ।।

सुन्दरसाथ इस लीला में बड़ी उमंग के साथ आएंगे। वह बाहरी दृष्टि से इसको देखेंगे, जिससे उनके मन में अति आनन्द होगा। फिर भी तुम तारतम वाणी (जागृत बुद्धि) के ज्ञान को छोड़ना नहीं अर्थात् आडीका (चमत्कारपूर्ण) लीला को ही सत्य नहीं मान बैठना।

त्यारे वचनतणां करसूं विचार, खरी वस्त जोसूं तत्काल।
वासना ओलखी लेसूं सही, माया जीवने वचन भारे केहेसूं नहीं।। ४४ ।।

तब तारतम वाणी पर विचार करेंगे। उससे सब आने वालों में से सुन्दरसाथ की पहचान हो जाएगी। जीव सृष्टि को पार की वाणी नहीं कहेंगे, क्योंकि यह उनकी समझ से परे की बात होगी।

ए आडीको कीधो उत्तम, पण घरनी निध ते कही तारतम।
जेथी ओलखिए आधार, वली जीवने टले अंधकार।। ४५ ।।

इसलिए इस आडीका लीला (चमत्कारिक लीला) को किया, लेकिन घर की जो न्यामत है वह तारतम ज्ञान है। उससे अपने धनी को पहचानो, जिससे अपने जीव का अन्धकार मिट जाए।

त्यारे गांगजी भाई पाम्या मन उछरंग, कीधां क्रतब अति घणे रंग।
साख्यात तणी सेवा कीधी सही, अंग पाछूं कोई राख्यूं नहीं।। ४६ ।।

यह सुनकर गांगजी भाई को मन में आनन्द हुआ और अति उल्लास के साथ सुन्दरसाथ को बुलाने के कार्य को किया। श्री देवचन्द्रजी को साक्षात् धाम धनी जानकर सेवा की और सुन्दरसाथ की सेवा में कोई कमी नहीं रखी।

Nijanand App

हवे साथ खोली काढूं आवार, ते तां तमने में कह्यो प्रकार।
श्री सुंदरबाई तणो अवतार, पूरण आवेस दीधो आधार।।४७।।

जो आपने ढंग बताया है उसको ही हृदय में लेकर सुन्दरसाथ की खोज में लगूंगा। श्री देवचन्द्रजी श्यामाजी (सुन्दरबाई) के अवतार हैं, जिनको श्री राजजी महाराज ने अपने आवेश की शक्ति दी है।

आपणने तेडवा आविया, साथ ऊपर छे पूरण दया।
अनेक वचन आपणने कह्या, पण भरम आडे कांई रुदे नव रह्या।।४८।।

सुन्दरसाथ के ऊपर अत्यन्त कृपा करके बुलाने के लिए राजजी महाराज आए हैं। उन्होंने तरह-तरह के ज्ञान से समझाया, किन्तु माया की शंकाओं ने वह ज्ञान हमारे हृदय में नहीं आने दिया।

त्यारे अनेक विधे आपणने कही, पण भरम बेठो चित आडो थई।
अनेक आपणने कह्या दृष्टांत, तोहे बेठां अमे ग्रही स्वांत।।४९।।

तब श्री राजजी महाराज ने अनेक प्रकार से हमें समझाया। फिर भी चित्त में संशय बना ही रहा। अनेक प्रकार के दृष्टान्त देकर समझाने पर भी हम शान्त होकर बैठे रहे।

अनेक आपणसूं कीधां उपाय, तोहे आपणो सुभाव न जाय।
त्यारे अनेक विधे कह्यूं तारतम, तोहे आपणो न गयो भरम।।५०।।

श्री देवचन्द्रजी ने हमें समझाने के लिए अनेक उपाय किए। फिर भी हमारे स्वभाव नहीं बदले (ढीठ के ढीठ बने रहे)। तब अनेक प्रकार से तारतम की वाणी समझाई। (धाम धनी के स्वरूप की पहचान कराई।) फिर भी हमारे संशय नहीं मिटे (हम उनकी पहचान न कर सके)।

अनेक आपणसूं कीधां विचार, कही कही वांक टाल्यो आधार।
अनेक पखे समझाव्यां सही, आपणने टांकी लागी नहीं।।५१।।

हमको अपने पास बिठाकर विचार-विमर्श कर हमारे अवगुण निकाले तथा अनेक तरह से दृष्टान्त (नरसैयां, कबीर, जाटी और अन्य) के ज्ञान से समझाया। फिर भी हमको उनके वचनों की चोट नहीं लगी।

त्यारे अनेक आडीका मेल्या आधार, तोहे आपणने न वली सार।
अनेक प्रकार करी करी रह्या, पख पचवीस आपणने कह्या।।५२।।

फिर हमें समझाने के लिए अनेक आडीका लीलाओं (चमत्कारों) का सहारा लिया (जैसे यमुनाजी को प्रगट कर दिखलाना, इत्यादि)। फिर भी हमें सुध नहीं आई। अनेक प्रकार की आडीका लीला करने पर भी सुन्दरसाथ नहीं जागा। तब परमधाम के पच्चीस पक्षों की पहचान कराई।

ते पण आपण रह्या सही, तोहे भरम उडाड्यो नहीं।
तोहे आपण ऊपर अति दया, वृज तणां सुख विगते कह्या।।५३।।

तो भी हम सुनते रहे पर संशय हमारे नहीं मिटे। फिर धाम धनी श्री देवचन्द्रजी ने कृपा करके ब्रज के सुखों को अच्छी तरह समझाया।

वली वसेखे वरणव्यो रास, पेहेला फेरानो कीधो प्रकास।
तोहे आपण हजी तेहनातेह, वली वरणव्या श्री धाम सनेह।।५४।।

जब ब्रज के सुखों को समझाने पर भी हम नहीं जागे (हमारे संशय नहीं मिटे), तब फिर रास का विशेष रूप से वर्णन किया। फिर भी सुन्दरसाथ जैसे के तैसे संशय में ही डूबे रहे। फिर परमधाम में एकदिली का कितना प्रेम है, उसको समझाया।

Nijanand App

दया आपण ऊपर अति घणी, प्रगट लीला कीधी घरतणी।
सेवा कीधी धनबाइए ओलखी धणी, सोभा साथमां लीधी अति घणी।।५५।।

फिर अति कृपा करते हुए अपने घर की हकीकत (लीला) का बयान किया। ऐसे वचनों को सुनकर धनबाई (गांगजी भाई) ने देवचन्द्रजी के अन्दर बैठे धाम धनी को पहचाना और सुन्दरसाथ में धन्य-धन्य हुए।

साथसों हेत कीधां अपार, धंन धंन धनबाईनो अवतार।
कांईक लेहेर लागी संसार, त्यारे अडवडती ऊभी राखी आधार।।५६।।

धनबाई के अवतार श्री गांगजी भाई ने सुन्दरसाथ से बहुत प्यार किया। उनको भी माया ने कुछ गिराना चाहा (भानबाई को छोड़ने का प्रसंग)। तब लड़खड़ाती हुई धनबाई की आत्मा को अपना बल देकर राजजी ने खड़ा रखा।

बेहेवट पूर खमाए नहीं, त्यारे बांह ग्रहीने काढी सही।
पण न वली सुध आपणने केमे, मोहजल गुण नव मूक्यो अमे।।५७।।

माया की नदी के तीखे बहाव को गांगजी भाई सहन नहीं कर पाए। तब धनी ने उनका हाथ पकड़ कर उन्हें माया से बाहर निकाल लिया। (एक तरफ पत्नी का प्यार और दूसरी तरफ धनी की सेवा—इन दोनों विचारों में चित्त डांवाडोल हो रहा था। धाम धनी ने माया छुड़ाकर सेवा में खड़ा रखा और पत्नी को छुड़ा दिया)। फिर भी हमको सुध नहीं आई और भवसागर को हमने नहीं छोड़ा।

त्यारे वढ्या आपणसूं पोतावट करी, तोहे भरम निद्रा नव मूकी परहरी।
त्यारे अनेक पेरे आसूंवालीने कह्यूं, पण एणे समे अमे कांई नव लह्यूं।।५८।।

तब अपना जानकर हमें डांटा। फिर भी हमारे संशय नहीं मिटे। तब अनेक तरह से रो-रोकर कहा, परन्तु इतने पर भी हमने कुछ ग्रहण नहीं किया।

त्यारे वली धणी जीए कीधा विचार, जे साथ घेर तेडी जावुं निरधार।
त्यारे संवत सतरे बारोतरे वरख, भादरवो मास अजवालो पख।।५९।।

तब सम्वत् सत्रह सौ बारह के भादों (भाद्रपद) महीने के उजाले पक्ष में धाम धनी ने फिर विचार किया कि सुन्दरसाथ को बुलाकर घर निश्चित ले जाना है।

चतुरदसी बुधवारी थई, सनंधे सर्वे श्री विहारीजीने कही।
मध्यरात पछी कीधो परियाण, बिहारीजीने कांईक खबर थई जाण।।६०।।

चतुर्दशी (चौदस) बुधवार के दिन बिहारीजी को अपना शरीर छोड़ने की पूर्ण जानकारी दे दी और आधी रात्रि के बाद शरीर त्याग दिया। तब बिहारीजी को कुछ होश आया।

हूं तेणे समे थई बेठी अजाण, मूने फजीत गिनाने कीधी निरवाण।
घरथी तेडी मूने दीधी निध, तोहे न मूकी जीवे मोहजल बुध।।६१।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उस समय मैं बेसुधि (बेखबरी) में थी। मेरी चतुराई ने मेरा मजाक उड़ाया। वरन् घर से बुलाकर मुझे अखण्ड ज्ञान दिया था, फिर भी मेरे जीव ने माया की बुद्धि को नहीं छोड़ा।

Nijanand App

मूने हती मायानी लेहेर, तो न आव्यो जीवने बेहेर।
त्यारे मारी निध गई मांहेथी मारे हाथ, श्री धाम घेर पोहोंता प्राणनाथ।। ६२ ।।

मैं माया की नींद में सो रही थी। इसलिए धनी के बिछुड़ने का विरह नहीं हुआ। तब मेरी वस्तु मेरे हाथ से चली गई और मेरे प्राणनाथ धाम पधारे (इन्द्रावती के दिल में उस समय उन्हें पहचान नहीं हुई कि मेरे अन्दर धनी विराजमान हो गए हैं)।

आंहीं अम मांहेथी अदृष्ट थया, अमे सारा साजा बेसी रह्या।
जो कांई जीवने आवे भाय, तो आ वचन केम काने संभलाय।। ६३ ।।

इस तरह से हमारे बीच में से धनी आंखों से ओझल हो गए और हम सब जैसे के तैसे संसार में बैठे रह गए। यदि जीव को उस समय सुध आ जाती तो "मेरे धनी धाम चले गए हैं", यह वचन कानों से नहीं सुने जाते।

ते तां में जोयूं मारी दृष्ट, अने जीव थई बेठो कोई दुष्ट।
नहीं तो विछोडो केम खमाए, पण दुष्ट भरम बेठो मन मांहें।। ६४ ।।

इसको तो मैंने अपनी दृष्टि से देखा है कि मेरा जीव दुष्ट होकर बैठा रहा, नहीं तो वियोग सहन नहीं होता। यह दुष्ट शंकाओं से भरा जीव अन्दर बैठा रहा।

एक वचनतणो नव कीधो विचार, न कांई ओलखिया आधार।
सांभलो रतनबाई ए कीहू प्रकार, एवी बुध केम आवी आवार।। ६५ ।।

एक वचन का भी विचार मैंने नहीं किया और न अपने धनी की पहचान ही की। हे रतनबाई (बिहारीजी) ऐसी बुद्धि हमारे अन्दर क्यों आई?

एणे समे अमने सूं थयूं, सगाईतणों सुख कांई नव लह्यूं।
जुओ रे बेहेनी अमे एम कां थया, एवडा दुख अमे खमीने रह्या।। ६६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, बहन रतनबाई! (बिहारीजी) हमको क्या हो गया कि मैंने मूल सम्बन्ध के पहचान का सुख नहीं लिया। यह दुःख मैंने कैसे सहन कर लिया?

ए दुखनी वातो छे अति घणी, पण ए अग्या मारा वालाजी तणी।
एणे समे जो निध नव जाय, तो आवेस सरूप केम मुकाय।। ६७ ।।

ऐसी दुख की बातें बहुत हैं, किन्तु मेरे वालाजी की ऐसी ही आज्ञा थी। उस समय यदि मैं अपने घर न गई होती तो इस आवेश स्वरूप की जुदाई मुझसे सहन न होती और मैं भी तन छोड़ देती।

आवेसे धणी ओलखाय, ओलखे खिण जुआ न रेहेवाय।
ते माटे जो एम न थाय, तो आ वाणी केम केहेवाय।। ६८ ।।

हमारे आवेश स्वरूप हमारे धनी हैं। यदि इसकी अच्छी तरह से पहचान हो जाती तो पहचान हो जाने के बाद मैं जुदा न हो सकती। इस वास्ते यदि ऐसा न होता तो यह विरह की वाणी मैं कैसे कहती?

हवे फिट फिट रे भूंडी तूं बुध, तें नव दीधी जीवने सुध।
महादुष्ट अभागणी तूं, जांण जीवने कां नव करयूं।। ६९ ।।

अपनी बुद्धि को धिक्कारती हूं, कि तूने मेरे जीव को ज्ञान क्यों नहीं दिया? तू महादुष्टा अभागिनी है, जिस कारण तूने जीव को जानकारी नहीं दी।

Nijanand App

एवडी वात तें केम करी सही, के तूं घर मूकीने गई।
के तूं विकल थई पापनी, विना खबर निध गई आपनी।।७० ।।

हे दुष्टा बुद्धि! तुमने ऐसी बात कैसे सहन कर ली? क्या तू शरीर छोड़कर चली गई थी? क्या तू इतनी शक्तिहीन हो गई थी कि अपनी निधि (श्री देवचन्द्रजी) चली गई और तुझे होश ही नहीं आया।

हवे तूंने सी दऊं रे गाल, ते नव लाध्यो अवसर आणी वार।
हवे फिट फिट रे भूंडा तूं मन, तें कां कीधो एवडो अधरम।।७१ ।।

हे मेरे पापी मन! तुझे कौन सी गाली दूं? तूने हाथ आए अवसर का लाभ नहीं उठाया, इतना अधर्म क्यों किया?

जीव समो तूं बेठो थई, तुझ देखतां ए निध गई।
एवडी उपमा बेठो लई, अने बेठो छे काया धणी थई।।७२ ।।

जीव! तू कैसा होकर बैठा रहा? तेरे देखते-देखते यह निधि (देवचन्द्रजी) चली गई। तू शरीर का मालिक बन के बैठा है, इतनी उपमा लेकर भी तूने कुछ नहीं किया।

तें नव कीधूं जीवने जांण, नेठ खोटो ते खोटो निरवाण।
आ क्रोध हतो सबलो समरथ, पण नव सरयूं तूं मांहेंथी अरथ।।७३ ।।

तूने जीव को सूचित नहीं किया, इसलिए तू नीच से नीच है। यह पक्की बात है। हे क्रोध! तू तो शक्तिशाली था, पर तुझसे भी कोई काम सिद्ध नहीं हुआ।

गुण सघले घारण आवियो, अने जीव कायामां बेसी रह्यो।
सघला गुण काया मंझार, कोणे नव लाध्यो अवसर आणी वार।।७४ ।।

मेरे सभी गुणों को नींद आई और जीव शरीर में बैठा रह गया। सब गुण तन के अन्दर ही बैठे रहे, किन्तु इस बार किसी को अवसर का लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

फिट फिट रे भूंडा जीव अजाण, तारी सगाई हती निरवाण।
रे मूरख तूंने सूं थयूं, ए निध जातां कांई पाछूं नव रह्यूं।।७५ ।।

हे मूर्ख पापी जीव! तुझे धिक्कार है। तेरा तो उनसे निश्चय ही सम्बन्ध था। हे मूर्ख! तुझे क्या हो गया? ऐसा सम्बन्धी जाते समय तू पीछे क्यों रह गया?

ऐटला दुख तें केम करी सह्या, अनेक विध तूंने धणीए कह्या।
निर्बल जीव नीच तूं थयो निरधार, तें नव कीधी धणीनी सार।।७६ ।।

इतना भारी दुःख तू कैसे सहन कर गया। धनी ने तो तुझे अनेक तरह से समझाया था। हे बलहीन जीव! तू इतना नीच क्यों हो गया कि तूने धनी की खबर नहीं ली?

एवो अबूझ अकरमी थयो तूं कांए, कांई न विमास्यूं रुदया माहें।
बुध मन सारूं बेठो थई, निध जातां तोहे घारण न गई।।७७ ।।

तू ऐसा अनजान कर्महीन कैसे हो गया? तूने अपने दिल में विचार नहीं किया। बुद्धि और मन के समान बैठा रहा और धनी के जाते समय तेरी गहरी नींद खुली नहीं।

Nijanand App

एवो कठण कोरडू तूं कांथयो, आवडी अगने हजी नव चड्यो।
पांच वरसनो होय जे बाल, ते पण कांइक करे संभाल।।७८ ।।

तू इतना कठोर खागडूं (दाल का रोड़ा जो पकता नहीं) क्यों हो गया? इतनी अग्नि जलने पर भी तू गला क्यों नहीं? एक पांच वर्ष का एक बालक भी कुछ होश रखता है।

हवे तूंने हूं केटलूं कहूं, अवसर आवयो तें कांई नव लह्यूं।
तारी दोरी कां न टूटी तत्काल, फिट फिट भूंडा किहां हतो काल।।७९ ।।

अब मैं तुझे कितना कहूं? हाथ आए मौके का कुछ लाभ नहीं लिया। तेरी सांस उसी समय क्यों नहीं छूट गई? हे पापी काल (मौत)! तू कहां चला गया था?

आ तां केहेर मोटो जुलम थयो, अणे जाणिए तो केम जाय सह्यो।
ते तां में मारी मीटे जोयूं, धरम अमारूं कांई नव रह्यूं।।८० ।।

यह तो बड़ा भारी जुल्म हुआ। इसे जानकर कैसे सहा जाए? इसको मैंने अपनी दृष्टि से देखा और विचार किया। इसे देखकर मैं तो धर्मरहित हो गई।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १०८ ।।

विलाप कर्‍या छे–राग रामश्री

जुओ रे बेहेनी हूं हाय हाय, करती हींडूं त्राहे त्राहे।
वालोजी रे विछड़तां, कां जीव कडका न थाए।। १ ।।

हे सखी रतनबाई (बिहारीजी)! मैं हाय-हाय और त्राहि-त्राहि करती फिर रही हूं। वालाजी के वियोग में टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए।

फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, केम आवी मुख वाण।
वाए न आव्यो ते दिसनो, धणी भेला चालतां मारा प्राण।। २ ।।

हे पापी आवाज! तुझे धिक्कार है। तुझसे ऐसी बोली कैसे निकली? मेरे प्राण के आधार धनी चले गए और तुझे खबर ही नहीं पड़ी। नहीं तो मैं धनी के साथ ही अपने प्राण छोड़ देती।

केम वली जिभ्या मारी, ए केहेतां वचन।
समूली न चुटाणी, जिहां थकी उतपन।। ३ ।।

हे मेरी जीभ! इन वचनों को कहते (कि धनी धाम चले गए हैं) तू जड़ से ही क्यों नहीं उखड़ गई, जहां से तू निकली है।

श्री धणीजी सिधावतां, केम रही वाचा रे अंग।
उखडी न पड्या दंतडा, घण घाय मुख भंग।। ४ ।।

धनीजी के चलते समय, हे जिह्वा! तू अंग में रह कैसे गई? हे दांतो! मुंह पर इतनी चोट लगने पर भी तुम उखड़ क्यों नहीं गए?

केम न सुणियां रे, ए वचन तें श्रवणा।
तें सूं न हता सुणया, वचन धणी तणां।। ५ ।।

हे कानो! तुमने सुना नहीं कि धनी धाम चले गए हैं। क्या तुमने धनी के ज्ञान वाले वचनों को कभी नहीं सुना था?

Nijanand App